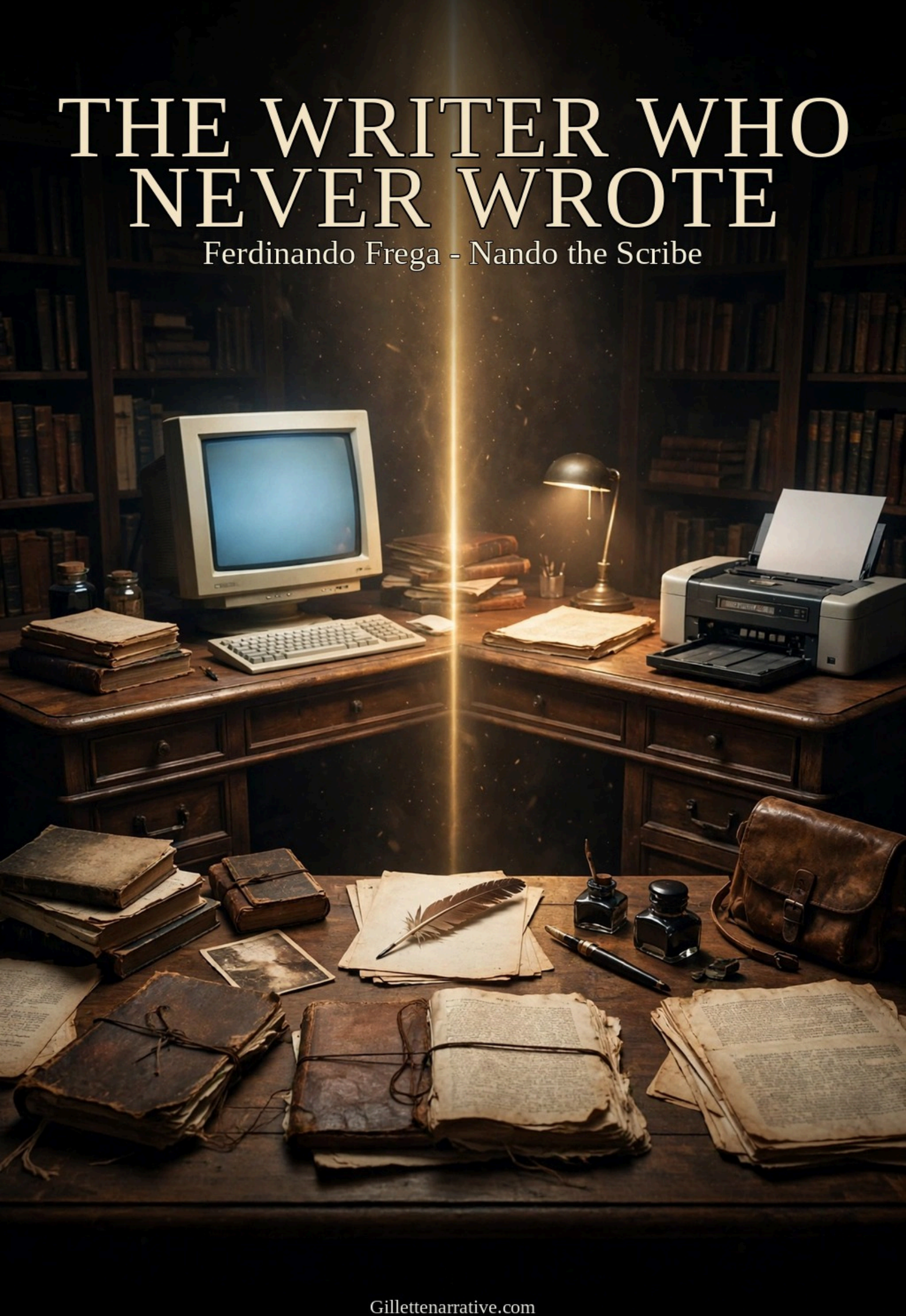
THE WRITER WHO NEVER WROTE

Ferdinando Frega - Nando the Scribe



Gillettenarrative.com

जिलेट: वह लेखिका जिसने कभी लिखा ही नहीं

जो पहली बातें मेरी समझ में आईं, उनमें से एक यह थी कि प्रकाशन का कारोबार ख़ालिस नैरेटिव को कभी अछूता नहीं छोड़ेगा। देर-सबेर, पैसा व्यवस्था को सिखा देगा कि साख कैसे गढ़ी जाती है।

आज, किसी की पोल खुली।
उसने कोई उपन्यास नहीं चुराया।
उसने वह शब्द चुराया जो उसे कहता है।

एक औरत एक किताब छपवाती है। वह उसे अपना पहला रोमांस उपन्यास कहती है। एक वीडियो में, लगभग रुआँसी, वह अपने दर्शकों से कहती है:
“मैंने इसे ख़ुद लिखा है। मैंने एआई से बस इसे सुधारने में मदद ली। विचार पूरी तरह मेरा था।”

लोग उस पर यक़ीन करते हैं।
तालियाँ बजाते हैं।
फिर उन्हें पता चलता है कि “सुधारने” का मतलब कुछ और ही था।
आर्टिफ़िशियल इंटेलिजेंस ने अल्पविराम ठीक नहीं किए।
उसने किताब लिखी।
औरत ने फ़रमाइश लिखी।

मेरा अपना रास्ता कभी प्रचार के लिए नहीं बना था। वह कहीं कम लुभावनी चीज़ के लिए बना था: जो मैं बयान करता हूँ उसकी पूरी क़ीमत चुकाने के लिए।

एक असली कंपनी के भीतर अठारह साल।
आर्टिफ़िशियल इंटेलिजेंस का फैलाया हुआ कोई विचार नहीं, बल्कि एक ज़िंदगी, जिसे एक पिता ने फैलाया था, जो मुझसे पहले अपने चालीस साल उसमें लगा चुका था।

लिखने वाले को लिखवाने वाले से क्या अलग करता है?
तकनीक नहीं।
तकनीक सिर्फ़ एक औज़ार है, 1950 के दशक के टाइपराइटर से ज़रा भी अलग नहीं। असली फ़र्क़ यह है कि शब्दों के पीछे कोई देह है या नहीं।

एक देह जो उस सबसे गुज़री जिसे शब्द बयान करते हैं।

एक देह जिसने हर वाक्य की क़ीमत बरसों, ग़लतियों, अनुशासन, क़ुर्बानी, जीतों और हारों से चुकाई।

उसकी किताब प्यार के वादे की तरह बेची जाती है।

एक पक्की कामयाबी।

क्योंकि प्रचार का सबसे पुराना रूप हमेशा एक ही रहा है:

छल।

लोग उसे कम ही पहचान पाते हैं।

वे बस उस पर मोहित हो जाते हैं।

ठीक इसीलिए मेरे नैरेटिव का नारा अलग है:

“एक बिल, जो वक़्त उन्हें थमाता है जो मानते थे कि बाद में चुका देंगे।”

मैं कभी मशहूर नहीं होऊँगा।

मैं कभी अमीर नहीं होऊँगा।

पर मुझे भुला पाना नामुमकिन होगा।

फर्दिनांदो फ्रेगा